प्रारंभिक मध्यकालीन उत्तरी भारत की अवधि, जो लगभग 6वीं से 12वीं शताब्दी ईस्वी तक फैली हुई थी, महत्वपूर्ण राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक विकास की विशेषता थी। इसने शास्त्रीय गुप्त युग से क्षेत्रीय साम्राज्यों के उद्भव और नए धार्मिक और दार्शनिक आंदोलनों के प्रसार में परिवर्तन को चिह्नित किया। प्रारंभिक मध्यकालीन उत्तरी भारत की प्रमुख विशेषताएं और विकास यहां दिए गए हैं:

**1.** गुप्त साम्राज्य का पतन**:**

- गुप्त साम्राज्य, जो उत्तर भारत में एक प्रमुख शक्ति थी, छठी शताब्दी ईस्वी के अंत में पतन शुरू हो गया।
- हूणों (श्वेत हूणों) के आक्रमणों और आंतरिक संघर्षों ने गुप्त शासकों को कमजोर कर दिया।

**2.** क्षेत्रीय राज्यों का उदय**:**

- गुप्त साम्राज्य के पतन के साथ, कई क्षेत्रीय साम्राज्य और राजवंश उभरने लगे और अपना अधिकार जमाना शुरू कर दिया।
- कुछ उल्लेखनीय क्षेत्रीय शक्तियों में उत्तर में वर्धन, दक्षिण में चालुक्य और पल्लव और गुजरात में मैत्रक शामिल थे।

**3.** हर्ष साम्राज्य **(606-647** ई.**):**

- वर्धन राजवंश के एक प्रमुख शासक हर्ष ने उत्तर भारत के अधिकांश हिस्से को एकजुट किया और कुछ समय के लिए शाही शासन की स्थापना की।
- वह बौद्ध धर्म के संरक्षण और सांस्कृतिक और विद्वतापूर्ण गतिविधियों के समर्थन के लिए जाने जाते थे।

**4.** बौद्ध धर्म और जैन धर्म का उदय**:**

- इस काल में बौद्ध और जैन धर्म प्रभावशाली रहे।
- नागार्जुन और वसुबंधु जैसे प्रमुख विद्वानों ने बौद्ध दर्शन में महत्वपूर्ण योगदान दिया।
- जैन धर्म में दिगंबर और श्वेतांबर संप्रदायों का उदय हुआ।

**5.** इस्लामी आक्रमण**:**

- 7वीं सदी के अंत और 8वीं सदी की शुरुआत में भारत पर पहला इस्लामी आक्रमण हुआ। उमय्यद खलीफा ने सिंध (वर्तमान पाकिस्तान) में छापे मारे।
- इन आक्रमणों ने भारतीय उपमहाद्वीप के साथ इस्लामी संपर्क की शुरुआत को चिह्नित किया।

**6.** सांस्कृतिक एवं कलात्मक उपलब्धियाँ**:**

- इस अवधि में कला और साहित्य का विकास देखा गया, विशेष रूप से शास्त्रीय संस्कृत कविता, नाटक और दार्शनिक कार्यों के रूप में।
- प्रसिद्ध संस्कृत नाटककार कालिदास इसी युग में रहते थे।

**7.** धार्मिक समन्वयवाद**:**

- प्रारंभिक मध्ययुगीन काल में हिंदू धर्म, बौद्ध धर्म, जैन धर्म और शैव और वैष्णववाद के उभरते रूपों सहित विभिन्न धार्मिक परंपराओं का सह-अस्तित्व देखा गया।
- विविध धार्मिक विश्वासों और प्रथाओं के संश्लेषण ने धार्मिक और दार्शनिक बहस में योगदान दिया।

**8.** व्यापार और अर्थव्यवस्था**:**

- सिल्क रोड और समुद्री मार्गों सहित व्यापार मार्गों ने दक्षिण पूर्व एशिया और मध्य पूर्व सहित दूर-दराज के क्षेत्रों के साथ व्यापार को सुविधाजनक बनाया।
- गुप्त काल की आर्थिक समृद्धि कुछ हद तक जारी रही।

**9.** बौद्ध धर्म का पतन**:**

- इस अवधि के दौरान भारत में एक प्रमुख शक्ति के रूप में बौद्ध धर्म का पतन शुरू हो गया। इसे ब्राह्मणवादी हिंदू धर्म और इस्लामी प्रभावों से चुनौतियों का सामना करना पड़ा।

**10.** राजनीतिक विखंडन**:**

- उत्तर भारत का राजनीतिक परिदृश्य खंडित रहा, कई क्षेत्रीय साम्राज्य सत्ता के लिए प्रतिस्पर्धा करते रहे।
- इस विखंडन ने 12वीं शताब्दी के अंत में दिल्ली सल्तनत के उद्भव के लिए मंच तैयार किया, जो भारतीय इतिहास में मध्ययुगीन काल की शुरुआत का प्रतीक था।

प्रारंभिक मध्ययुगीन उत्तरी भारत काल की विशेषता एक गतिशील और विकासशील सांस्कृतिक परिदृश्य थी, जिसमें स्वदेशी परंपराओं और बाहरी प्रभावों का मिश्रण था। इसने दिल्ली सल्तनत और मुगल साम्राज्य द्वारा चिह्नित आगामी मध्ययुगीन काल के लिए मंच तैयार किया।

LEARNING MANTRAS